00 अहिल्याबाई होल्कर

इस अध्याय में हम पढ़ेंगे-

- जीवन परिचय
- समाज सधारक के रूप में अहिल्याबाई
- लोक कल्याणकारी शासिका के रूप में अहिल्याबाई
- अहिल्याबाई का राजनीतिक दर्शन
- धार्मिक शासिका के रूप में अहिल्या बाई
- अहिल्याबाई के नैतिक विचार
- अहिल्याबाई के विचारों की प्रासंगिकता
- अहिल्याबाई : 'द फिलॉस्फर क्वीन'
- **स्मरणीय तथ्य**
- **संभावित प्रश्न**

होल्कर वंश के संस्थापक, इंदौर के महाराजा श्रीमंत मल्हार राव होल्कर की पुत्रवधू एवं मालवा राज्य की कुशल व लोकप्रिय प्रशासिका महारानी अहिल्याबाई होल्कर अपनी उदार प्रवत्ति, न्यायप्रियता, धार्मिक सद्भावना, परोपकारिता एवं समाज कल्याण संबंधी कार्यों को लेकर प्रजा के बीच काफी लोकप्रिय थीं, इसलिए प्रजा उन्हें उनके जीवनकाल में ही आदरपूर्वक **'देवी'**, **'राजमाता'** एवं **'माँ साहिब'** कहकर संबोधित करने लगी थी।

अहिल्याबाई होल्कर : जीवन परिचय

- **जन्म**- 31 मई, 1725 ई.
- **स्थान**- महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले का चौड़ी ग्राम।
- **माता-पिता**- 'सुशीलाबाई' एवं 'मानकोजी शिंदे'।
- **विवाह**- खाण्डेराव होल्कर के साथ (1733 ई. में)।
- **शासिका**- होल्कर राजवंश की।
- **शासनकाल**- 1767 ई. - 1795 ई. तक।
- **मृत्यु**- 13 अगस्त, 1795 ई. को इंदौर में।

समाज सुधारक के रूप में अहिल्याबाई

समानता और **संपूर्ण सामाजिक न्याय** अहिल्याबाई के सामाजिक दर्शन के आधार थे। इस हेतु उन्होंने **'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय'** तथा **'रामराज्य'** की संकल्पना को अपना लक्ष्य निर्धारित किया। समाज सुधारक के रूप में अहिल्याबाई के योगदान को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है-

- **समानता पर बल**- अपने शासनकाल में अहिल्याबाई ने समानता पर बल देते हुए इस बात को ध्यान में रखा कि उनके शासन क्षेत्र में कोई भूखा न सोये। इस हेतु उन्होंने **गरीबों एवं तीर्थयात्रियों** के लिए **मुफ्त रसोई** की शुरूआत की थी।
- **जातिगत भेदभाव का विरोध**- अहिल्याबाई ने अपने राज्यक्षेत्र में जातिगत भेदभाव को समाप्त करने पर बल दिया। यद्यपि उनके शासनकाल में ब्राह्मणों को अधिक सम्मान मिलता था, तथापि वे अपने दरबार में कार्यरत कर्मचारियों को योग्यता के आधार नियुक्त करती थीं, न की जाति के आधार पर।

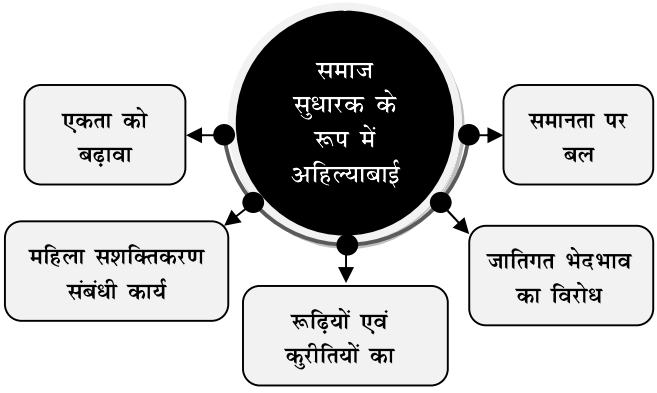

- **रूढ़ियों एवं कुरीतियों का विरोध**- अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल के दौरान **विधवा विवाह का समर्थन** एवं **पर्दा प्रथा और सती प्रथा का विरोध** किया। अपने राजदरबार में वे बिना पर्दा के रहती थीं। इसके अलावा, उनके राज्य में अन्य सामान्य महिलाओं को भी पर्दा करने हेतु बाध्य नहीं किया जाता था। सती प्रथा को रोकने के लिए उन्होंने अपनी पुत्री **'मुक्ताबाई'** के सती होने का विरोध किया। हालाँकि वे मुक्ताबाई को सती होने से रोकने में असफल रहीं।
- **महिला सशक्तिकरण संबंधी कार्य**- उनका यह कथन कि **''स्त्रियाँ पुरुषों से कमजोर नहीं होतीं, बस उनमें शक्ति का उपयोग करने का तरीका अलग होता है''** स्त्रियों के सशक्त होने की व्याख्या करता है। फिर भी राजमाता अहिल्याबाई ने नारी सशक्तिकरण हेतु उल्लेखनीय कार्य किए। उन्होंने बालिकाओं एवं महिलाओं को शिक्षा हेतु प्रोत्साहित किया। महिलाओं को सेना में सम्मिलित करने के साथ-साथ उन्हें अस्त्र-शस्त्र चलाने एवं घुड़सवारी करने हेतु प्रशिक्षित किया। पारंपरिक कानूनों में परिवर्तन कर विधवा महिलाओं को पति की संपत्ति का भागीदार बनाया। इसके साथ ही, महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु भी अनेक कार्य किए।
- **एकता को बढ़ावा**- अहिल्याबाई ने राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भी कई लोक कल्याणकारी कार्य किए। उदाहरणार्थ- उन्होंने गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, द्वारिका, काशी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी एवं दक्षिण में रामेश्वरम आदि स्थानों पर मंदिरों एवं धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।

लोक कल्याणकारी शासिका के रूप में अहिल्याबाई

रानी अहिल्याबाई ने अपना संपूर्ण शासनकाल जनता की भलाई के लिए समर्पित किया था, जो कि उनके द्वारा कराये गए लोक कल्याणकारी कार्यों से सिद्ध भी होता है। उनके द्वारा कराये गए लोक कल्याणकारी कार्य निम्नलिखित हैं-

- **जन सेवा**- **''शासन का अर्थ केवल सत्ता का प्रयोग करना नहीं है, अपितु प्रजा की सेवा करना उनके जीवन में सुधार लाना है।''** अहिल्याबाई के इस वाक्य ने उन्हें जनसेवा करने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने संकल्प लिया था कि कोई भी व्यक्ति उनके राज्य में भूखा नहीं सोयेगा। इस संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने अपने संपूर्ण राज्यक्षेत्र में भूखों के लिए **'अन्नक्षेत्र'** एवं **'सदावर्त'** (मुफ्त रसोई) तथा **प्यासों के लिए प्याऊ** खुलवायीं।
- **आधारभूत अवसंरचना का निर्माण**- इंदौर एवं महेश्वर को गाँव से शहर का रूप देने में अहिल्याबाई का अतुलनीय योगदान रहा है। इन गाँवों को शहर बनाने हेतु उन्होंने पक्की सड़कें, महेश्वर में साड़ी उद्योग, धार्मिक स्थापत्य अवसंरचनाएँ आदि का निर्माण करवाया। विभिन्न गाँवों में उन्होंने कुएँ, तालाब, बावड़ियाँ आदि भी बनवायीं। इसके अलावा, उन्होंने वाराणसी से कोलकाता के बीच एक लंबे सड़क मार्ग का निर्माण भी करवाया था।
- **आर्थिक सुधार**- अहिल्याबाई ने पहले से चली आ रही कठोर कर प्रणाली को परिवर्तित कर **उदार कर प्रणाली** को लागू किया अर्थात् करों की दर घटा दी गई एवं **अनावश्यक करों को समाप्त** कर दिया गया। उन्होंने ग्रामों को सड़कों के माध्यम से शहरों से जोड़ने का काम किया, जिससे ग्रामीण-शहरी विकास साथ-साथ हो सका। महेश्वर में हथकरघा (साड़ी) उद्योग की स्थापना करवाई, जिससे लोगों को रोजगार प्राप्त हो सका।
- **कृषि-कर प्रणाली**- अहिल्याबाई के शासनकाल में मालवा उन्नत कृषि और उपज वाला क्षेत्र हुआ करता था। अहिल्याबाई से पहले कृषि उपज का लगभग आधा भाग **लगान** के रूप में वसूल किया जाता था, किंतु अहिल्याबाई ने इसे **एक-चौथाई कर** दिया। कृषि एवं वाणिज्य की अभिवृद्धि को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कृषकों को त्वरित न्याय देने की व्यवस्था की। इसके अलावा, आपदा के समय लगान वसूली रोक दी जाती थी। युद्ध में हुई क्षति की भरपाई राजकीय खजाने से की जाती थी।
- **शिक्षा**- अहिल्याबाई ने जनता को, विशेषकर महिलाओं को, शिक्षित करने पर विशेष बल दिया। उनका कथन है कि **''ज्ञान ही शक्ति है, और ज्ञान का प्रसार ही समाज को प्रगति की ओर ले जा सकता है।''**
- **धार्मिक स्थापत्यों का निर्माण**- उन्होंने मध्यप्रदेश के इंदौर में मंदिर; महेश्वर में महेश्वर घाट, पेशवा घाट, कालेश्वर घाट, सिद्धेश्वर घाट, अहिल्या घाट, अहिल्या महल एवं महेश्वर किला; ओंकारेश्वर में अमलेश्वर मंदिर; उज्जैन में चिंतामणि गणेश मंदिर; माण्डू में नीलकंठ महादेव मंदिर; ओंकारेश्वर में गौतमाबाई द्वारा शुरू किये गए गौरी सोमनाथ मंदिर का निर्माण कार्य कराकर विभिन्न स्थानों पर धार्मिक स्थापत्यों का निर्माण करवाया। मध्यप्रदेश के अलावा इन्होंने अपने राज्यक्षेत्र की सीमाओं के बाहर भी अनेक धार्मिक स्थापत्यों का निर्माण करवाया था।

निर्माण की सबसे सस्ती किताबें घर बैठे मंगवाने हेतु संपर्क करें-
8349180217

अहिल्याबाई का राजनीतिक दर्शन

अहिल्याबाई होल्कर एक कुशल व कूटनीतिज्ञ शासिका थीं। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के हिसाब से अपनी कुशलता एवं कूटनीतिज्ञता का परिचय दिया, जिसकी एक झलक हमें उनके द्वारा ली गई शपथ (महेश्वर में उत्कीर्ण) में भी देखने को मिलती है। उन्होंने शपथ लेते हुए कहा था कि **''ईश्वर ने मुझ पर जो उत्तरदायित्व रखा है, उसे मुझे निभाना है, मेरा काम प्रजा को सुखी रखना है, मैं अपने प्रत्येक काम के लिए जिम्मेदार हूँ। सामर्थ्य और सत्ता के बल पर मैं यहाँ जो भी कर रही हूँ उसका ईश्वर के यहाँ मुझे जवाब देना है।''** इस प्रकार रानी की कुशलता एवं कूटनीतिज्ञता को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं-

शासकों से मित्रवत् संबंध

- रानी अहिल्याबाई ने अपनी कूटनीतिज्ञता के आधार पर अपने शासनकाल में होल्कर वंश के सभी सीमावर्ती राज्यों से मित्रवत् संबंध स्थापित किये। उदाहरण के लिए, **सिंधिया वंश**। इन मैत्रीपूर्ण संबंधों के कारण वे निरंतर युद्धों से बची रहीं और इसका लाभ उन्हें लोक कल्याणकारी कार्यों को पूरा करने में मिला।
- संकट के समय रानी अपने मित्र शासकों की सहायता करती थीं, ताकि मौका पड़ने पर उनको भी मित्रों का सहयोग प्राप्त हो सके। उदाहरण के लिए, तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात् आर्थिक तंगी से जूझ रहे सिंधिया राजवंश की उन्होंने आर्थिक रूप से सहायता की थी।

सैन्य कुशलता एवं कूटनीति

- शासनकाल के प्रारंभिक वर्षों में रानी अहिल्याबाई को रामपुरा के **चन्द्रावत राजपूतों** एवं **राघोबा के विद्रोह** का सामना करना पड़ा, किंतु अपनी सैन्य कुशलता एवं बुद्धि चातुर्य का परिचय देते हुए उन्होंने तुकोजीराव की सहायता से इन विद्रोहों को दबा दिया।
- सैन्य कुशलता का परिचय देते हुए उन्होंने आदर्श सैन्य संगठनों का निर्माण किया। इन आदर्श सैन्य संगठनों में भी सेना को नकद वेतन देती थीं। सेना का फ्रांसीसी पद्धति पर गठन किया। विभिन्न प्रकार की सैन्य टुकड़ियों, जैसे- घुड़सेना, ऊँट सेना, हस्ति सेना एवं पैदल सेना का गठन किया।
- उनकी राजनीतिक, प्रशासनिक कुशलता का ही परिणाम था कि वे लगभग 28 वर्षों तक एक दीर्घकालिक शासनकाल को सँभाल सकीं।

न्याय प्रणाली

- अहिल्याबाई अपनी न्याय व्यवस्था के लिए संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध थीं। उन्होंने अपने न्याय दर्शन में **विवेकशास्त्र** और **निष्पक्षता** को आधार बनाया था। वे **समान न्याय व्यवस्था** और **दोनों पक्षों के तर्क सुनकर ही न्याय** करती थीं।
- रानी **प्रतिदिन दो बार दरबार आयोजित** करती थीं। इस दरबार में रानी से कोई भी व्यक्ति सीधे संपर्क कर सकता था। इसके अलावा, न्याय प्रणाली को अधिक सरल बनाने के लिए रानी ने **पंचायती न्याय व्यवस्था** को भी लागू किया।
- अहिल्याबाई के शासनकाल में राज्य में दोषियों को तीन प्रकार के दण्ड दिये जाते थे- सामान्य दण्ड, अर्थदण्ड और मृत्यु दण्ड। मृत्यु दण्ड की कठोर व्यवस्था लागू थी। उदाहरण के लिए, दोषी को हाथी के पैरों तले कुचलना।

राजधानी परिवर्तन

रानी ने अपनी कूटनीतिज्ञता और बुद्धि चातुर्य के आधार पर तत्कालीन परिस्थितियों को समझते हुए इंदौर से अपनी राजधानी **महेश्वर** स्थानांतरित कर ली। रानी के द्वारा किये गए राजधानी परिवर्तन के पीछे उनके निहित उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- राजधानी के रूप में एक ऐसा भौगोलिक स्थल हो, जो प्राकृतिक और सामरिक सुरक्षा की दृष्टि से अनुकूल हो।
- एक ऐसा स्थल, जिसे उत्तर और दक्षिण की राजनीति एवं व्यापार का केन्द्र बनाया जा सके।
- एक ऐसा स्थल, जहाँ आध्यात्मिक उन्नति हो, जिससे साम्राज्य में शांति व्यवस्था बनाई जा सके।

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजधानी परिवर्तन करना अहिल्याबाई का कूटनीतिपूर्ण निर्णय था।

धार्मिक शासिका के रूप में अहिल्याबाई

भगवान शिव की उपासक

- रानी अहिल्याबाई का समस्त जीवन कर्तव्य पालन एवं परमार्थ की साधना में व्यतीत हुआ। वह भगवान शिव की अनन्य उपासक थीं, इसलिए वे सदैव स्वयं को महारानी के बजाय भगवान शिव की विनम्र सेविका तथा उपासिका मानती थीं।

धार्मिक दर्शन

- अहिल्याबाई भक्ति आधारित धार्मिक दर्शन में विश्वास करती थीं। वे मानती थीं कि ईश्वर की भक्ति से जीवन के समस्त दु:ख खत्म होते हैं। उनका धार्मिक दर्शन **सहिष्णुता और उदारता** पर आधारित था। अहिल्याबाई का कहना था कि **''सच्चा धर्म वही है जिसमें धार्मिक सहिष्णुता और प्राणीमात्र की सेवा हो।''** यही वजह है कि रानी के द्वारा न तो किसी भी प्रकार का कोई धार्मिक कर लगाया गया, और न ही जनता पर किसी विशेष धर्म को आरोपित किया गया, बल्कि वह तो सभी धर्मों को लगभग एक समान दृष्टि से देखती थीं।

धार्मिक कार्य

- अहिल्याबाई ने मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों पर धार्मिक स्थापत्यों का निर्माण कराने के साथ-साथ अपने राज्यक्षेत्र की भौगोलिक सीमाओं से परे भी विभिन्न स्थानों पर मंदिरों, घाटों, धर्मशालाओं आदि का निर्माण करवाया। उदाहरण के लिए, उन्होंने काशी (वाराणसी) में अहिल्या घाट, मणिकर्णिका घाट, दशाश्रमेघ घाट; अयोध्या एवं पंढरपुर में राम मंदिर; काशी विश्वनाथ मंदिर, विष्णुपद मंदिर (गया, बिहार); गंगोत्री में विश्वनाथ, केदारनाथ, भैरव, अन्नपूर्णा नामक चार मंदिरों का निर्माण; श्रीशैलम (आंध्रप्रदेश) में मल्लिकार्जुन शिव मंदिर आदि का निर्माण करवाया।

अहिल्याबाई के नैतिक विचार

सदाचरण एवं सद्विचार भारतीय दर्शनशास्त्र में धर्म के आधार माने गए हैं, और जिस शासक या शासिका में ये दो गुण होते हैं वह जनता का कल्याण कर सकता है। ध्यातव्य है कि रानी अहिल्याबाई भी इन्हीं गुणों की धनी थीं। उन्होंने जनता को स्व-उन्नति करने के लिए कुछ नैतिक विचार दिये, जो कि निम्नलिखित हैं-

- लोगों को ईश्वर की भक्ति करने के साथ-साथ कर्म भी करना चाहिए।
- उन्होंने मानव सेवा को सर्वोपरि माना और कहा कि लोगों को नि:स्वार्थ भाव से मानव सेवा करनी चाहिए, जिससे जीवन सार्थक होता है।
- उन्होंने ईमानदारी के मूल्य को महत्त्व दिया। वे हमेशा कहती थीं कि हमें अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार रहना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के दरबार में हमें जवाब देना होगा।
- उन्होंने अहिंसा, सादगी, कर्तव्यनिष्ठा, न्याय जैसे उच्च नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाने का नैतिक उपदेश दिया।
- उन्होंने आदर्श एवं नैतिक जीवन के लिए उपर्युक्त नैतिक मूल्यों के अलावा, परोपकारिता, दया, करुणा जैसे उच्च नैतिक मूल्यों को अपनाने की सलाह दी।

अहिल्याबाई के विचारों की प्रासंगिकता

रानी अहिल्याबाई के विचारों की प्रासंगिकता निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर सिद्ध की जा सकती है-

- **लोक कल्याण राज्य**- रानी अहिल्याबाई के राजनीतिक एवं प्रशासनिक विचार जन कल्याणकारी विचारधारा पर आधारित थे। ध्यातव्य है कि आज भी हमारी केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकारें इसी विचारधारा के आधार पर शासन संचालित करती हैं।
- **समाजिक न्याय**- अहिल्याबाई ने अपने शासन काल में समानता पर बल देते हुऐ इस बात को ध्यान में रखा कि उनके राज्य में कोई भूखा न सोए, इसके लिए उन्हें मुक्त रसोई की शुरूआत की तथा साथ ही अहिल्याबाई ने जातिगत भेदभाव को समाप्त करने पर बल दिया।
- **राष्ट्रीय एकीकरण**- अहिल्याबाई ने राष्ट्रीय एकीकरण स्थापित करने के लिए अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भी कई लोक कल्याणकारी कार्य किए। उदाहरणार्थ- उन्होंने गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, द्वारिका, काशी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी एवं दक्षिण में रामेश्वरम आदि स्थानों पर मंदिरों एवं धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।
- **लैंगिक समानता**- रानी ने लैंगिक समानता पर जोर दिया। स्वातंत्र्योत्तर सरकारें भी इस विचार का अनुसरण कर रही हैं। उदाहरण के लिए, केन्द्र सरकार का **नारी शक्ति वंदन अधिनियम।**
- **नैतिकता एवं आध्यात्मिकता**- व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता एवं आध्यात्म का सामंजस्य आज भी लोगों के लिए प्रासंगिक है।
- **सामरिक नीति**- उन्होंने सैन्य कुशलता एवं सैन्य सुरक्षा पर बल दिया था। वर्तमान सरकारें भी अपनी नीति में सैन्य सुरक्षा को स्थान देती हैं।

अहिल्याबाई : ''द फिलॉस्फर क्वीन''

- ब्रिटिश इतिहासकार **'जॉन कीस'** ने अहिल्याबाई को **''द फिलॉस्फर क्वीन''** की उपाधि दी थी। कीस ने उनकी भूरी-भरी प्रशंसा करते हुए कहा कि ''मालवा की दर्शनिक-रानी अहिल्याबाई होल्कर स्पष्ट रूप से व्यापक राजनीतिक परिदृश्य की गहरी पर्यवेक्षक थीं।''
- वस्तुतः दार्शनिक रानी ऐसी रानी को कहा जाता है, जिसमें अन्य गुणों की अपेक्षा बुद्धि एवं विवेक गुण की प्रधानता होती है। ऐसी रानी, जिसने अपने राज्य के शासन संचालन उपर्युक्त गुणों का व्यापक उपयोग किया हो, दार्शनिक रानी कहलाती है।
- चूँकि रानी अहिल्याबाई ने भी अपने शासन संचालन में बुद्धि, विवेक और ज्ञान का व्यापक स्तर पर उपयोग किया, इसलिए उन्हें 'द फिलॉस्फर क्वीन' कहा जाता है।
- राजधानी परिवर्तन पड़ोसी राज्यों से मित्रवत् संबंध, जनता का समर्थन प्राप्त करने हेतु विभिन्न लोक कल्याणकारी कार्य आदि उनके बुद्धि एवं विवेकपूर्ण निर्णय थे।

स्मरणीय तथ्य

समाज सुधारक के रूप में अहिल्याबाई

- **लक्ष्य**- 'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय' तथा 'रामराज्य' की संकल्पना।
- **समानता पर बल**- गरीबों एवं तीर्थयात्रियों के लिए मुफ्त रसोई।
- **जातिगत भेदभाव का विरोध**- दरबार में कर्मचारियों को योग्यता के आधार पर नियुक्त।
- **रूढ़ियों एवं कुरीतियों का विरोध**- विधवा विवाह का समर्थन एवं पर्दा प्रथा और सती प्रथा का विरोध।
- **महिला सशक्तिकरण**- शिक्षा, युद्ध हेतु प्रशिक्षण, पारंपरिक कानूनों में संशोधन।
- **एकता को बढ़वा**- राज्य क्षेत्र के बाहर मंदिरों, धर्मशालाओं का निर्माण।

लोक कल्याणकारी शासिका के रूप में अहिल्याबाई

- जनसेवा।
- आधारभूत अवसंरचना का निर्माण।
- आर्थिक सुधार-उदार कर प्रणाली, अनावश्यक करों को समाप्त।
- उदार कृषि-कर प्रणाली।
- शिक्षा पर बल।
- धार्मिक स्थापत्यों का निर्माण।

अहिल्याबाई का राजनीतिक दर्शन

- समकालीन शासकों से मित्रवत् संबंध- सिंधिया राजवंश।
- सैन्य कुशलता एवं कूटनीति- रामपुरा के चन्द्रावत राजपूत एवं राघोबा के विद्रोहों का दमन।
- राजधानी परिवर्तन।

धार्मिक शासिका के रूप में अहिल्याबाई

- भगवान शिव की उपासिका।
- सहिष्णुता एवं उदारतापूर्ण धार्मिक दर्शन।
- राज्य क्षेत्र के भीतर और बाहर मंदिरों एवं धर्मशालाओं का निर्माण।

अहिल्याबाई के नैतिक विचार

- ईश्वर भक्ति के साथ कर्म की प्रधानता।
- निःस्वार्थ भाव से जनसेवा।
- उच्च नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाना।

सदावर्त

- रानी अहिल्याबाई द्वारा गरीबों एवं तीर्थयात्रियों के लिए खोली गई मुफ्त की रसोई।

अहिल्याबाई ने किन विद्रोहों से अपने राज्य की रक्षा की थी?

- अहिल्याबाई ने मुख्यतः रामपुरा के चन्द्रावत राजपूतों एवं राघोबा के विद्रोहों से अपने राज्य की रक्षा की थी।

अहिल्याबाई स्वयं को किसकी प्रतिनिधि मानती थीं?

- भगवान शिव की

अहिल्याबाई द्वारा अपने राज्य क्षेत्र की सीमाओं से परे निर्मित किन्हीं चार धार्मिक स्थापत्यों के नाम लिखिए।

- श्रीशैलम (आंध्रप्रदेश)- मल्लिकार्जुन शिव मंदिर।
- वाराणसी- मणिकर्णिका घाट
- पंढरपुर (महाराष्ट्र)- राम मंदिर
- गंगोत्री (उत्तराखण्ड)- विश्वनाथ, अन्नपूर्णा आदि चार मंदिर।

अहिल्याबाई को ''द फिलॉस्फर क्वीन'' की उपाधि

- ब्रिटिश इतिहासकार जॉन कीस ने।

संभावित प्रश्न

1. अति लघु-उत्तरीय प्रश्न

- अहिल्याबाई का शासनकाल क्या था?
- अहिल्याबाई का विवाह किससे हुआ था?
- अहिल्याबाई के समाज सुधार के रूप में किये गए कोई दो कार्य लिखिए।
- लोक कल्याणकारी शासिका के रूप में अहिल्याबाई के कोई दो कार्य लिखिए।
- अहिल्याबाई के नैतिक विचार।
- सदावर्त
- अहिल्याबाई ने किन विद्रोहों से अपने राज्य की रक्षा की थी?
- अहिल्याबाई स्वयं को किसकी प्रतिनिधि मानती थीं?
- अहिल्याबाई के कोई चार धार्मिक कार्य लिखिए।
- अहिल्याबाई को ''द फिलॉस्फर क्वीन'' की उपाधि किसने दी थी?

2. लघु-उत्तरीय प्रश्न

- अहिल्याबाई के बारे में आप क्या जानते हैं?
- एक समाज सुधारक के रूप में अहिल्याबाई के योगदान को स्पष्ट कीजिए।
- लोक कल्याणकारी शासिका के रूप में अहिल्याबाई के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।
- अहिल्याबाई ने मध्यप्रदेश में कौन-कौन से स्थानों पर धार्मिक स्थापत्यों का निर्माण करवाया? संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
- अहिल्याबाई के राजनीतिक दर्शन पर टिप्पणी लिखिए।
- अहिल्याबाई एक कुशल एवं कूटनीतिज्ञ शासिका थीं? स्पष्ट कीजिए।
- अहिल्याबाई के धार्मिक दर्शन के बारे में बताइए।
- अहिल्याबाई द्वारा दिए गए नैतिक विचारों को लिखिए।
- अहिल्याबाई के विचारों की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।
- अहिल्याबाई एक 'दार्शनिक रानी' थी टिप्पणी कीजिए।

3. दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

- अहिल्याबाई का परिचय देते हुए उनके द्वारा किए गए सामाजिक-आर्थिक सुधारों को लिखिए।
- अहिल्याबाई को 'राजमाता' क्यों कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
- धार्मिक शासिक के रूप में अहिल्याबाई के व्यक्तित्व का मूल्यांकन कीजिए।
- ''अहिल्याबाई के किये गए कार्य एवं उनके विचार वर्तमान में भी अनुकरणीय हैं।'' स्पष्ट कीजिए।
- अहिल्याबाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।
- वतेमान संदर्भ में अहिल्याबाई के विचारों की प्रसांगिकता बताइए।

♦≈♦♦≈♦♦≈♦♦≈♦